

## Patrika

### UP has lowest employment opportunity

**लखनऊ।** 'खेलोगे कूदोगे तो बनोगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे को बनोगे नवाब' जिस प्रदेश में अभिभावकों की सोच ऐसी हो वह खेल जगत में आगे कैसे बढ़ सकता है। यह कहना है लखनऊ के रीजनल स्पोर्ट्स ऑफिसर एस.एस. मिश्र का।

अच्छे स्कूल से इंटर किया, बेस्ट यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग लेकिन जॉब नहीं मिली। जो मिल भी रही थी वह या तो अंडर प्रोफाइल थी या सैलरी उस हिसाब से नहीं थी। मजबूरन मेट्रो सिटी की ओर रुख करना पड़ा। यह कहते हैं 25 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनयर ईशान गुप्ता।

बात चाहे पढ़ाई के क्षेत्र की करें या खेल कूद की, आलम लगभग एक ही है। युवाओं को आज भी अच्छे अवसर प्रदेश में नहीं मिल रहे हैं। खेलकूद में अनदेखी और कहीं न कहीं राजनीति से प्रभावित होने के चलते अभिभावक बच्चों को खेलने तो देते हैं लेकिन उसमें करियर नहीं बनाने देते। मौके की तलाश में युवाओं को दर-दर भटकना पड़ रहा है।

ऐसे में सवाल उठता है कि प्रदेश के सबसे बड़े राजनीतिक सूबे में केंद्र सरकार को हिला देने की क्षमता तो है, लेकिन अपने राज्य के बच्चों को उपरोक्त अवसर दे पाने की क़ाबिलियत नहीं। दरअसल सूबे की स्थिति यह है कि यहां से पढ़कर निकले युवा देश के अन्य शहरों की बड़ी-बड़ी कंपनियों में अपनी छाप छोड़ रहे हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो अपने घर लौटकर घरवालों के साथ ही रह कर जीवन यापन करना चाहते हैं, लेकिन अवसर के मारे हैं।

देश में आज सबसे ज्यादा युवा उत्तर प्रदेश में हैं और रोजगार के अवसर यहां सबसे कम। यह गलती सिर्फ मौजूदा सरकार की ही नहीं बल्कि अब तक सत्ता में रह चुकी हर राजनीतिक दल की है। किसी भी सरकार ने यहां इंडस्ट्री लाने के बारे में नहीं सोचा। यही मुख्य वजह है कि युवाओं को मजबूर होकर मेट्रो सिटी की ओर रुख करना पड़ रहा है।

सरकारों की ओर से वोट बैंक के लिए रोजगार की जगह बेरोजगारी भत्ते देना जरूरी समझा है। वही उत्तर प्रदेश में कई लोग निवेश करना चाहते हैं लेकिन कानून व्यवस्था, भ्रष्टाचार की स्थिति देखते हुए पीछे हट जाते हैं। 4जी के इस युग में युवाओं के लिये सबसे बड़ी निराशा कम अवसर ही है।